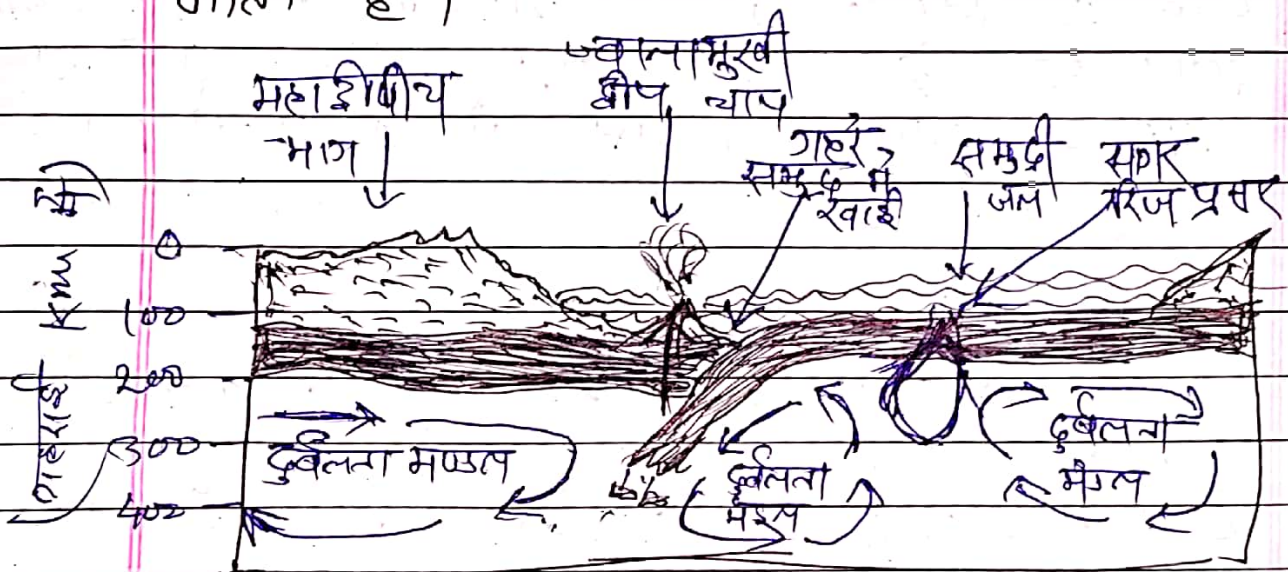


होमस का संवहन तरंग सिद्धांत

होमस महोदय 1928-29 में अपना विचार दिया। होमस ने संवहन तरंगों के द्वारा महाद्विप महासागर तथा पर्वतों की उत्पत्ति की व्याख्या किया। इन्होंने पृथ्वी के ऊपरी सतह को SIAL का भू-पर्पटी कहा है और निचली परत को SIMA या Substratum (अर्थात् संस्तर) कहा। SIMA का तापमान SIAL की अपेक्षा अधिक होता है और SIMA में कहीं-2 रेडियो धर्मी पदार्थ अधिक पाए जाते हैं। जिनसे उत्पन्न ऊर्जा संवहन तरंगों के रूप में ऊपर उठती है। जो ऊपर स्थित SIAL को धक्का देकर ऊपर उठाती है। जिसे दो धटनाएँ होती हैं। जिससे SIAL का भू-पर्पटी टूट जाती है।



- (i) अपसरण - (Divergence) → जिस आस के सहारे भू-पर्पटी विखंडित होती है उसे अपसरण किनारा कहा जाता है। इसके सहारे एक दरार का निर्माण होता है जिसमें सँ SIMA का पदार्थ ऊपर आता है। किन्तु इस समय SIAL के चारों तरफ का जल उस दरार में प्रवेश करता

है। जिससे Magma शीतल होकर मू-पर्वत का भाग बन जाता है। और इसपर एक नया समुद्र निर्मित होता है। इस प्रकार नए महासागर का सृजन होता है। इस महासागर में लगातार ज्वालामुखी की क्रिया होती रहती है।

(ii) अभिसरण (convergent) → अपसारी किनारे के विपरीत अभिवारी किनारा होता है। अभिवारी किनारे में भूमि के नीचे घस जाती है जहाँ भूस्नानि का निर्माण होता है। और इस भू-स्नानि में दोनों तरफ से SIAL के मू-पर्वत का अवसाद नदीयों द्वारा जमा किया जाता है। जिसपर प्रवहित या गतिशील SIAL का दबाव पड़ता है। जिससे मूलतः भू-स्नानियों से ऊपर उठ जाता है। जिससे माइदर पर्वत का निर्माण होता है।

अलोचना →

(i) होमस महोदय ने महाद्वीपों की दिशा और गति का विवरण नहीं दिया।

(ii) होमस ने SIAL के गति के कारणों और साक्ष्यों की भी व्याख्या नहीं किया।

इसके उपरांत भी होमस का सिद्धांत अन्य वैज्ञानिकों की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक और तर्कसंगत है जो Plate tectonic theory को सही आधार प्रदान करती है।